नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

राजस्थान की संवादी भजन परंपरा में व्याप्त सांगीतिक एवं सामाजिक चेतना

राजेश कुमार
शोध छात्र, संगीत विभाग
राजकीय महाविद्यालय, बूँदी

डॉ. विजयेन्द्र गौतम
पर्यवेक्षकः
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर

सार-संक्षेप

भजन गायन अभी तक शोधकर्ताओं और संगीतकारों के लिए उतना चर्चित विषय नहीं है। सभी भजन गायन को एक सामान्य कला मानकर विचार करते हैं, किन्तु मेरे दृष्टिकोण से भारतीय संगीत की सबसे अधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय कला है एवं संगीत के क्षेत्र में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। विदुषी एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी को भजन गायन में ही देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से महिमा मंडित किया गया था। पं. जसराज एवं पं. भीमसेन जोशी भजन गायन के कारण ही जन-जन तक पहुँच हो पाई हैं। वर्तमान में भजन परंपरा के नाम पर डीजे भजन संध्या का प्रचार हो रहा है। भजन के नाम पर तेज और कानफाडू संगीत युवा पीढ़ी को परोसा जा रहा है। एक ही तरह की ताल पर की-बोर्ड और ओक्टोपेड जैसे वाद्यों के प्रयोग से शब्द और साहित्य का महत्त्व न्यून हो रहा है। फिल्मी और लोक धुनों में बेतुके और हल्के साहित्य का प्रयोग भक्त कवियों की रचनाओं को जन सामान्य से दूर कर रहा है। इस प्रकार के भजन साहित्य और संगीत के दृष्टिकोण से अत्यंत निम्न स्तर के होते हैं। आज की युवा पीढ़ी में फिल्मों और डिजिटल सोशल माध्यमों से प्रभावित होकर समूह बनाकर तेज ऑडियो सिस्टम पर नृत्य करते हुए मंदिर जाने की परंपरा विकसित हो रही है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य राजस्थान की संवादी भजन-शैली को संगीत के शिक्षार्थियों और श्रोताओं तक पहुँचाना है। अतः इस शोध-पत्र में संवादी भजनों के विषय में मेरे व्यक्तिगत अध्ययन, विषय-विशेषज्ञों एवं कलाकारों से प्राप्त जानकारी, मीड़िया एवं ऑडियो-वीडियो इत्यादि के द्वारा जो भी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है, उसका संक्षिप्त सांगीतिक और सामाजिक चेतना का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुख्य शब्द : राजस्थान, संगीत, भजन शैली, संवादी भजन, लोक चेतना, सांगीतिक चेतना, सामाजिक चेतना।

शोध-पत्र

भजन गायन अभी तक शोधकर्ताओं और संगीतकारों के लिए उतना चर्चित विषय नहीं है। सभी भजन गायन को एक सामान्य कला मानकर विचार करते हैं, किन्तु मेरे दृष्टिकोण से भारतीय संगीत की सबसे अधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय कला है एवं संगीत के क्षेत्र में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। विदुषी एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी को भजन गायन में ही देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से महिमा मंडित किया गया है। पं. जसराज एवं पं. भीमसेन जोशी उनके भजन गायन के कारण ही जन-जन तक (सामान्य श्रोताओं) पहुँच हो पाई हैं। वर्तमान में भजन परंपरा के नाम पर डीजे भजन संध्या का प्रचार हो रहा है। भजन के नाम पर तेज और कानफाडू संगीत युवा पीढ़ी को परोसा जा रहा है। एक ही तरह की ताल पर की-बोर्ड और ओक्टोपेड जैसे वाद्यों के प्रयोग से शब्द और साहित्य का महत्त्व न्यून हो रहा है। फिल्मी और लोक धुनों में बेतुके और हल्के साहित्य का प्रयोग भक्त कवियों की रचनाओं को जन-सामान्य से दूर कर रहा है। इस प्रकार के भजन साहित्य और संगीत के दृष्टिकोण से अत्यंत निम्न स्तर के होते हैं। आज की युवा पीढ़ी में फिल्मों और डिजिटल सोशल माध्यमों से प्रभावित होकर समूह बनाकर तेज ऑडियो सिस्टम पर नृत्य करते हुए मंदिर जाने की परंपरा विकसित हो रही है।

पूजा कोटि गुणम स्त्रोतम स्त्रोत कोटि गुणम जपम,
जपात्कोटि गुणम गानम गानात्परतरम नाहि। (माथुर 9)

भक्ति गायन की महिमा से हिन्दू ग्रन्थ भरे पड़े है। वैदिक काल में वेदों की ऋचाओं का सस्वर गायन किया जाता था। भक्ति संगीत की अनेक शैलियाँ प्रचलित हैं। आज तक इस देश की भजन परंपरा जीवित और फल-फूल रही है, किन्तु समय, स्थान, संस्कृति की विविधताओं के कारण भजन गायन शैली के अनेक स्वरूप प्रचलित है। राजस्थान के ग्रामीण और शहरी अंचलों में रात्री जागरण परंपरा के फलस्वरूप एक नवीन भजन गायन प्रचलित है जिसको हमने संवादी भजन कहा है और इस शैली को संवादी भजन शैली कहा है।

राजस्थान में संवादी भजन शैली के प्रभाव वाले क्षेत्र (जिले)

(पीले रंग से प्रदर्शित)

सामान्य समाज में विविध सामाजिक एवं धार्मिक आयोजनों में भक्ति संगीत के कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। ये आयोजन व्यक्ति विशेष और गाँव या समाज द्वारा किये जाते है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति अथवा परिवार विशेष द्वारा किसी के जन्म-दिन, विवाह-दिवस, मृत्यु-दिवस या अन्य किसी शुभ अवसर पर भी अपने निवास अथवा किसी धार्मिक स्थान पर भक्ति संगीत रात्रि जागरण के आयोजन होते रहते है। इसी परंपरा का परिणाम है 'संवादी भजन' जो हमारी सनातन संस्कृति से संबंधित रहा है।

वर्तमान में इस रात्री जागरण के स्थान पर डीजे भजन संध्या का प्रचार हो रहा है, जहाँ पर एक ही तरह की ताल पर की-बोर्ड और ओक्टोपेड जैसे वाद्यों का प्रयोग होने लगा है, जिसमें साहित्य का कोई महत्त्व नहीं है। इस प्रकार के भजन साहित्य और संगीत दोनों ही दृष्टिकोण से अत्यंत निम्न स्तर के होते हैं। आज की युवा पीढ़ी में फिल्मों और डिजिटल माध्यमों से प्रभावित होकर समूह बनाकर तेज ऑडियो सिस्टम पर नृत्य करते हुए मंदिर जाने की परम्परा विकसित हो रही है। यहाँ तक कि मंदिरों में होने वाले धार्मिक कार्यक्रमों में भी नृत्य के प्रवेश से यह परंपरा और फूहड़ और असांगीतिक बनती जा रही है।

राजस्थान में दो प्रकार के भक्ति संगीत का प्रचलन पाया जाता है–

1. मंच परंपरा 2. जागरण परंपरा

मंच परंपरा में भजन गायन की एक और शैली जो आकाशवाणी से मान्यता प्राप्त है। यह शैली प्रायः आकाशवाणी दूरदर्शन तक सीमित है, किन्तु कुछ प्रतिभाशाली कलाकारों ने इस भजन गायन को बहुत ही उच्च स्वरूप प्रदान किया है। जिनमें हरिओम शरण, अनूप जलोटा, जगजीत सिंह जैसे गायकों का नाम सम्मान के साथ लिया जा सकता है।

राजस्थान में जागरण परंपरा के अंतर्गत दो प्रकार के भजनों का प्रचार है। एक संवादी भजन और दूसरे ब्रज क्षेत्र के भजन।

क्योंकि हमारे शोध-पत्र का विषय संवादी भजन शैली में व्याप्त सांगीतिक और सामाजिक चेतना है अतः यहाँ जागरण परंपरा की संवादी भजन शैली में व्याप्त सांगीतिक और सामाजिक चेतना के विषय में निम्न संदर्भों का उल्लेख करना समीचीन होगा–

पद्मश्री अली मोहम्मद ने राजस्थान की भजन परम्परा के विषय में बताया कि–''यह राजस्थान की मिश्रित शैली है इस भजन शैली को सूफीयाना लोक भजन शैली कहा जाता है। संवादी भजनों की उत्पत्ति के विषय में आपने बताया कि पारवा भजन शैली में पूरे भजन में एक कथा होती है। यह शैली चूरू व बीकानेर में ही प्रचलित है। इसमें एक आदमी के पीछे सहगान (कोरस) में भी गाते हैं। जैसे श्रवण की कथा आदि। इस भजन शैली के रचियता पीथा राम जी के शिष्य अणतू राम को माना जाता है।'' (मोहम्मद)

जागरण परंपरा प्रसिद्ध गायक डॉ. हनुमान सहाय ने संवादी भजनों के विषय में बताया कि इन ''भजनों को संवादी भजन नाम देना उचित है और नहीं भी, क्योंकि यह एक अपभ्रंश नाम है। प्रत्येक संप्रदाय जैसे राधा-कृष्ण संप्रदाय, निम्बार्क संप्रदाय, रामानंद संप्रदाय ये जितने संप्रदाय हैं, ये केवल हमें ईश्वर की ओर ले जाते हैं। इनके जो अनुयायी थे सब मिलकर गाया करते थे। उसी को समाजी या समाज गायन तथा अपभ्रंश होते-होते गाँव के लोग संवादी कहने लगे। इनका शुद्ध नाम तो समाज गायन ही है। ईश्वर और भक्त जब सम हो जाते हैं अर्थात् बराबर हो जाते हैं तब दोनों की मुख्यतः बढ़ जाती है, तब इसे संवादी कहा जा सकता है। इस भजन शैली को सनातन भजन शैली कहा जा सकता है क्योंकि जब से ईश्वर है तब से भजनों का उद्भव है। चिरंजी लाल जी, मुंशी खां साहब, बिहारी लाल जी कत्थक यह सब संतों के पद गाया करते थे और रागों पर आधारित गाया करते थे। इन भजनों को संतों से उद्बोधित कहा जा सकता है।'' (सहाय)

''सांवर मल कत्थक ने इस भजनों को श्विधावाटी शैली'' बताया है और उस शैली के प्रमुख कलाकार बिहारी लाल 'कथक' हुए जो विधासर (बिदासर) के थे, इसलिए इस शैली को विधावाटी शैली कहा।'' (कथक)

सांगीतिक दृष्टि से राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में प्रचलित इस भजन गायन पर मांड शैली का पूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। सामान्यतः भारतीय संगीत की विभिन्न रागों में जैसे कल्याण, मांड, हमीर, केदार, सोरठ, देस, खमाज, काफी, कलिंगडा, प्रभाती, कान्हड़ा, मालकौंस, तोड़ी, मारवा, पूरिया, चारुकेशी, भीमपलासी, भैरवी, भैरव, रागेश्री, बागेश्री शिवरंजनी, भूपाली जैसी प्रमुख और प्रचलित रागों का प्रयोग किया जाता है।

कुछ अति प्रचलित भजन की रचनाओं में व्याप्त सांगीतिक चेतना को उदाहरण स्वरूप उल्लेखित करना चाहूँगा–

''मैं अपने राम को रिझांऊ...'' मोइनूद्दीन खान सीकर वाले द्वारा रचित यह भजन राग भीमपलासी पर आधारित है। ''मन लागो मेरो यार फकीरी

में...'' भक्त कबीर द्वारा रचित इस भजन को गायक मोइनूद्दीन खां साहब (सीकर वाले) ने इसे राग कलावती पर अधारित बताया है किन्तु कलावती में ऋषभ के प्रयोग से एक अन्य राग जनसम्मोहनी का प्रभाव भी दिखाई देता है। राजस्थान के भजन गायको और श्रोताओं में यह भजन अत्यंत लोकप्रिय है। इन रचनाओं में शास्त्री या सूफी, और राजस्थान की मांड गायकी का मिश्रण इसे एक अलग ही शैली की ओर ले जाता है जिसे हमने संवादी शैली कहा है।

''अब मोरी राखो लाज हरि...'' स्वर्गीय मोइनूद्दीन खां ने राग पूरिया धनाश्री में सूरदास जी के पदों को स्वरबद्ध कर अद्धा तीनताल के माध्यम से संवाद करते हुए मर्म स्पर्शी उद्‌गारों को इस गीत के माध्यम से उद्घाटित किया है। शुद्ध राग गत स्वर प्रयोग के साथ उनका तान कहने का अंदाज विलक्षण है। इस प्रकार की तान सूफी गायकी में सुनने को मिलती है यही संवादी भजनों को विशेष बात है कि इनमें शास्त्रीय तत्त्वों के साथ सूफी गायन के तत्वों का भी समावेश है। अद्धा त्रिताल का ठहराव के साथ प्रयोग साहित्य की गंभीरता को स्पष्ट करने में सक्षम होता है।

''हमको ओढ़ावे चदरिया चलती बिरिया...'' खान साहब द्वारा निर्गुण संवादी भजन को राग अहीर भैरव में स्वरबद्ध कर कहरवा ताल का सुन्दहर प्रयोग किया गया है। भजन की एक-एक पंक्ति, सुनने वालों के मन को झखझोर देती है, इस तरह का प्रस्तुतिकरण इनके द्वारा किया गया है। भक्ति के बैरागी भावों कि सुंदर अदायगी, कहरवा ताल की सूफी चाल में जब अठखेलियाँ करती है तो श्रोताओं को स्वतः ही आत्मचिंतन को मजबूर कर देती है। राजस्थाअन के संवादी भजन गायकों का मंच रात्रि जागरण कार्यक्रम ही होते थे। हजारों श्रोता इन कार्यक्रमों में उपस्थित रहकर रात-रात भर भजनों की रस गंगा में स्नान करते थे।

इन्हीं में एक फकीर गायक सभी संप्रदायों के संतों व भक्तों की रचनाओं के भावों को अपने सुमधुर संगीत से मुखरित करने वाले बाबा बिहारी जी कत्थ्क द्वारा लिखित भजन प्रभु तेरो नाम को इन्होंने राग धानी तथा कहरवा ताल में स्वरबद्ध किया है। बाद में जयदेव वर्मा (संगीतकार) ने बाबा जी से उपरोक्त गीत को खरीद कर अपने नाम से फिल्म 'हम दोनों' के लिए लता जी से गवाया। यह भजन बहुत ही प्रचलित हुआ। आज भी यह गीत बिहारी जी तथा लता मंगेशकर जी की आवाज में यू-ट्यूब पर उपलब्ध है। लता जी ने इसे पूर्णतया सुगम शैली में गाया है जबकि इसी भजन को बाबा के श्री मुख से सुनते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सामान्य भजन और संवादी भजन, गायन की दृष्टि से कितने भिन्न होते हैं। शब्द के भावों को गायकी से स्पष्ट करना और विभिन्नि सांगीतिक तत्त्व जैसे तान, मुर्की, गमक आदि का प्रयोग शास्त्रीय शैली के प्रभाव को स्पष्ट करता है।

''जिनकी लगन राम संग नाहि..., '' 'बाबा' बिहारी जी के द्वारा राग कौशिकी कान्हड़ा पर आधारित धुन में संगीतबद्ध की गई है। पंक्तियों में भक्ति रस व वीर रस दृष्टिगोचर होता है अतः पंडित जी की संगीत रचना, इस चेतावनी भजन के साथ पूरा न्याय करती प्रतीत होती है। जिस तरह बंदिश तार सप्तक के 'षड़ज' से शुरू होकर मध्य सप्तक के 'धैवत', 'पंचम' से उतरते हुए 'मध्यम', 'गंधार' का सहारा लेकर संवादी स्वर 'षड़ज' पर ठहराव करती है, उपर्युक्त रस अपने आप आनंद बिखेरने लगते हैं, अतः साहित्य एवं स्वर के सामंजस्य को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि 'बाबा' ने अपनी सभी रचनाओं में साहित्य एवं स्वर का पूरा ध्यान रखा है। अद्धात्रिताल में निबद्ध रचना में आरोहात्म तान राग के स्वरूप को पूर्णतया स्पष्ट करती है।

''जीव तू जाएँगो हम जानी..., भक्ति काल के महानतम निर्गुण कवि भक्त कबीर द्वारा रचित गीत 'जीव तू जाएँगो हम जानी' उनके उम्दा भजनों में से एक है। इस भजन में उन्होंने इस नश्वर संसार से राजा-रानी, धरती-अंबर, चाँद-सूरज इत्यादि के अस्थाई होने की बात कहते हुए, परमात्मा की भक्ति को ही स्थाई तथा अनश्वर बताया है। इस संवादी भजन को बाबा बिहारी जी ने शानदार तरीके से राग कालिंगडा में तीनताल के साथ प्रस्तुत किया है। तार सप्तक के षडज पर सम राग के प्रभाव को स्पष्ट करता है।

जयपुर के पंडिज चिरंजी लाल तंवर का भजन ''प्रभु मोरे अवगुण चित्त ना धरों..., '' (सूरदास) शिवरंजनी राग में 9 मात्रा की बसंत ताल, रागेश्वरी में ''झनक श्याम की पैंजनियाँ...'' अद्धा त्रिताल आदि दर्जनों रचनाएँ आज भी प्रसिद्ध हैं। (पंडित जी विभिन्न गीतों को अलग-अलग अप्रचलित मुश्किल तालों यथा साढे 6 मात्र, 11 मात्रा, 13 मात्रा इत्यादि में सुगमता से गाते रहे हैं) संवादी भजनों की एक और विशेषता यह है कि ये रात्रि जागरण में गाए जाते हैं जिसमें रागों के समय सिद्धान्त का भी यथा संभव पालन करते हैं। प्रायः रात्रि के प्रथम प्रहर से अंतिम प्रहर के रागों में ही रचनाएँ प्राप्त होती है।

उक्त वर्णन से भजन गायन का सांगीतिक महत्त्व स्पष्ट हो जाता है। ये सभी हिंदुस्तानी संगीत की राग परंपरा के प्रवाहक रहे हैं। विभिन्न भक्त कवियों की चेतना युक्त वाणी इस भक्ति स्वर की लहरियों के साथ जन-मानस के मन पर गहरा प्रभाव डालती है।

संवादी भजनों में लोक चेतना-राजस्थान की धरती भक्ति और गायन से परिपूर्ण है। ऐसे हजारों भक्त कवि जिनकी वाणी को स्वर प्रदान करने के लिए हजारों संगीतकार भक्तों ने इस धरती पर जन्म लिया है। यहाँ अनेक सन्त-साधक भी हुए। उनकी अमृतवर्षी वाणी से अभी तक हमारा देश पूर्णतः परिचित नहीं हुआ।

''जांभोजी, जसनाथजी, दादू, सुन्दरदास, चरणदास व मीरा की वाणी ने तो अपनी यश-पताका देश में दूर तक फैलायी, किन्तु विशाल राजस्थान के गाँव-गाँव में, आज भी ज्ञात-अज्ञात सैकड़ों सन्तों के पद गाये जाते हैं, जिनकी मधुरता, कोमलता और प्रखरता सुनने वालों के हृदय को ज्ञान, भक्ति और प्रेम की रसस्विनी से आप्लावित कर देती है।'' (शर्मा एवं सांखला 205)

यहाँ लोक चेतना का तात्पर्य अच्छे संस्कार और सदविचारों से है। भजनों के साहित्य पर विचार करने से ज्ञात होता है कि संवादी भजनों का उद्देश्य

केवल मनोरंजन नहीं है, उनके साहित्य में समाज को उचित दिशा देने का सामर्थ्य भी है। संत साहित्य का गायन इस शैली की प्रमुख विशिष्टता है। मानव मूल्यों और लोक चेतना के महत्त्वपूर्ण ज्ञान को जनमानस तक पहुँचाने में इन भजनों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है। सबसे अधिक महत्त्व की बात यह है कि यह ज्ञान गाँव-गाँव तक सहज ही इन भक्ति गीतों के माध्यम से उपलब्ध हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे अनेक व्यक्ति मिल जाते है जो औपचारिक रूप से शिक्षित नहीं होते हुए भी इन सभी मूल्यों पर अपनी आस्था रखते हैं। लोक तक इनका प्रभाव अधिक होता है। ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे सत्संगी व्यक्ति अनेक सामाजिक बुराइयों से स्वयं भी दूर रहते है तथा भावी पीढ़ी को संरक्षण एवं नियंत्रण प्रदान करते हैं। बहुत से युवा इस प्रकार के आयोजनों से प्रभावित होकर संगीत को अपना व्यवसाय भी बना लेते हैं। भक्त कवियों मुख्यरूप से अष्टछाप के कवियों की रचनाओं में व्याप्त साहित्य में अनेक लोक चेतना के तत्व पाए जाते हैं–

1. ईश्वर आराधना से आत्मकल्याण।
2. विभिन्न धार्मिक आडम्बरों से समाज को दूर रखना।
3. अनेक सामाजिक भ्रांतियों, कुरीतियों से स्वयं और समाज को जागरूक करना।
4. ईश्वर के सर्व व्याप्त होने के भाव से मनुष्य सच्चरित्र बनता है।
5. दीन और असहाय मनुष्यों की सहायता करने का भाव जाग्रत करना
6. मनुष्य जीवन को अच्छे कार्यों में प्रेरित करना है।
7. जीवन में कर्मशील रहना।
8. ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठ बनाना।
9. समाज एवं राष्ट्र के प्रति दायित्वों का बोध बने रहना।
10. संवादी भजनों का संगीत और संगीतकारों के निर्माण में योगदान।

अध्ययन की प्रासंगिकता–आज के युवा संगीतकारों को भजन गायन के क्षेत्र में व्यवसाय, सरकारी नौकरी एवं रोजगार, संगीत शिक्षा विषय में भजन गायन के पाठ्यक्रम चलाने, भजन शैली पर शोध कार्य हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करना इस अध्ययन की प्रासंगिकता है। समाज को नैतिकता, संस्कार एवं चरित्रवान बनाने में भजन परंपरा का योगदान महत्त्वपूर्ण है। राजस्थान के कुछ उपलब्ध प्रसिद्ध भजन गायकों की जानकारी–

स्व. पंडित चिरंजी लाल तंवर जयपुर

श्री बुन्दु खान जयपुर (युवा भजन गायक)

श्री बनारसी लाल झोरी खंडेला सीकर

डॉ. विजयेन्द्र गौतम जयपुर राजस्थान

श्री रामस्वरूप दास, सीकर (राजस्थान) (युवा भजन गायक)

श्री सांवरमल कथक, जयपुर (राजस्थान) (युवा भजन गायक)

स्वर्गीय श्री मुंशी खां (बावरा), नागौर (राजस्थान)

पद्मश्री गनी मोहम्मद और अली मोहम्मद, बीकानेर (राजस्थान)

स्वर्गीय श्री बिहारी कत्थक, बीदासर, चूरू (राजस्थान)

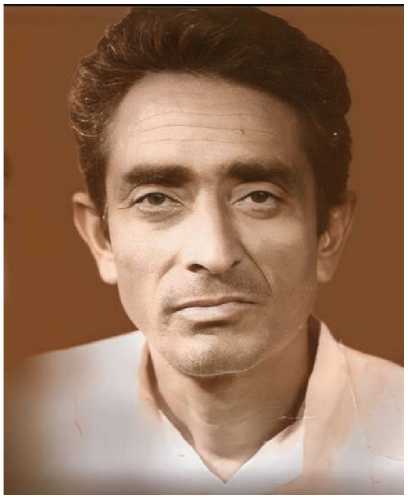

स्वर्गीय श्री मोइनुद्दीन खाँ, सीकर (राजस्थान)

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार के आयोजन युवा पीढ़ी को उत्कृष्ट जीवन जीने और रोजगारोन्मुख करने में अत्यंत सहयोगी सिद्ध होते हैं। अनेक धार्मिक ट्रस्ट इस प्रकार के आयोजनों में वृद्धि कर इस परंपरा को जीवित रखने का कार्य कर रहें है, किन्तु इसमें भी कर्ण कटु संगीत का प्रवेश इस परंपरा को विषाक्त कर रहा है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में भजनों के आयोजनों का स्थान अब डीजे और श्याम भजन लेता जा रहा है, जो राजस्थान की संवादी भजन परम्परा के कलाकारों, सांगीतिक और सामाजिक चेतना के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध हो रहा है।

संदर्भ

1. माथुर, निशि, अष्टछाप भक्त कवि और पुष्टिमार्गीय सेवा में संगीत श्रीमती किरण परनामी राज पब्लिशिंग जयपुर (2011), पृष्ठ संख्या 9
2. मोहम्मद, अली, भजन एवं मांड गायेक से प्राप्तकर्ताः राजेश कुमार, 10 मार्च 2022
3. सहाय, हनुमान, भजन एवं मांड गायेक से प्राप्तकर्ताः राजेश कुमार, 14 मार्च 2022
4. कथक, सांवरमल, युवा भजन एवं मांड गायेक से प्राप्तकर्ताः राजेश कुमार, 14 मार्च 2022
5. शर्मा, डॉ. वसुमती एवं, कमल किशोर सांखला, राजस्थान का संत-साहित्य (सम्पा.) राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, (2014), पृष्ठ संख्या 205